पूजा स्थल/मंदिर आदि के लिए प्रार्थना

हे परब्रम्ह, दिव्य पिता, दिव्य माता, मेरी उच्चतम आत्मा,
मेरे आध्यात्मिक मार्गदर्शकों, सहायकों व गुरुजनों,
समस्त आध्यात्मिक मार्गदर्शकों, सहायकों व गुरुजनों,
समस्त उपचारात्मक देवदूतों एवं दिव्य प्राणी,
महान कर्म मंडल

हे ईश्वर मैं विनम्रतापूर्वक दिव्य आशीर्वाद का आह्वान करता हूँ, कि मैं इस स्थान पर आपके आशीर्वाद का साधन बना हूँ
आप मेरा तदानुसार मार्गदर्शन करें व मुझे सुरक्षा प्रदान करें
मैं वह हूँ जो मैं हूँ

इस स्थान पर दिव्य प्रकाश की प्रचुरता हो। दिव्य प्रकाश, दिव्य अग्नि बनकर सम्पूर्ण नकारात्मक ऊर्जा को प्रज्जवलित कर उसे दिव्य प्रकाश में परिवर्तित कर डाले। यह दिव्य अग्नि इस स्थान के कोने-कोने में प्रवाहित हो। इस स्थान पर अग्नि हो, अग्नि हो, अग्नि हो, केवल दिव्य अग्नि हो

इस स्थान पर आशीर्वाद हो कि यहाँ दिव्य प्रेम, दिव्य करुणा, दिव्य दया की प्रचुरता हो, उपचारात्मक ऊर्जाओं की प्रचुरता हो, सम्पन्नता, प्रसन्नता, दिव्य सामंजस्यता की प्रचुरता हो, आध्यात्मिकता एवं दिव्य आनंद हो। सभी के अंदर से हर प्रकार का डर एवं संशय दूर करें

जो भी यहाँ उपचार के लिए आए, उसे आरोग्य प्राप्त हो
सभी को विवेक व ज्ञान का आशीर्वाद प्राप्त हो
सब दुखों की जगह, प्रसन्नता व आनंद भर जाए
सभी को सम्पन्नता की प्रचुरता का आशीर्वाद प्राप्त हो
सभी लोग दूसरों को देने के लिए व बाँटने के लिए तत्पर रहें
सभी में एकात्मता हो

सब के दिलों में शांति, सदभावना एवं एकता हो
यहाँ उपस्थित सभी दिव्य प्राणियों को दिव्य प्रकाश, दिव्य शक्ति, दिव्य प्रेम, दिव्य करुणा, दिव्य दया, दिव्य विवेक, दिव्य ज्ञान और आध्यात्मिकता की प्रचुरता का आशीर्वाद प्राप्त हो। यहाँ के कार्यवाहकों को दिव्य मार्गदर्शन का आशीर्वाद मिले जिससे वह अपना काम पूरी सच्चाई एवं पवित्र भाव से करें

हे ईश्वर आपका, धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद

Copyright @ All rights reserved

स्वयं की नींद में ज्ञान प्राप्त करें

**हे परब्रम्ह,
दिव्य पिता, दिव्य माता,
मेरी उच्चतम आत्मा, मेरे समस्त आध्यात्मिक मार्गदर्शकों और गुरुजनों।
कृपया आज मेरे सूक्ष्म शरीर में सही आकाशीय विद्यालय की ओर मेरा मार्गदर्शन और रक्षा करें ताकि आज मैं अपनी नींद में**

_____

**का ज्ञान प्राप्त कर सकूँ ।
धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद**

सोते समय एक आरामदायक स्थिति में लेटें और अपनी आँखें बंद कर लें। अब अपनी साँस पे ध्यान केंद्रित करते हुए धीमी लेकिन गहरी साँस लें। जब आप सुबह उठें, तो इस शिक्षण के लिए कृपया धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद, ज़रूर कहें

Copyright @ All rights reserved

अंग क्षमा अभिकथन

(अंग का नाम)____वर्षों के बाद, मुझे पता चला कि आप कहाँ हैं। धन्यवाद
मेरी जानकारी के बिना कि आप कहाँ हैं, आपने मेरा ध्यान रखा। आपने दिन-रात मेरे लिए बहुत मेहनत की है। मैंने इतने सालों तक आपके द्वारा न पसंद की गई सभी चीजों को खाकर आपको नुकसान पहुंचाया है। मुझे माफ कर दें। मुझे आपकी आवश्यकता है। कृपया मुझे माफ कर दें अगर जाने या अनजाने में मैंने आपको किसी भी तरह से नुकसान पहुंचाया है। अब से मैं आपकी देखभाल करूंगा
मैं _____ नहीं खाऊंगा। अब मुझे पता है कि वे आपके लिए अच्छे नहीं हैं। कृपया मेरे जीवन के अंत तक मेरे साथ रहें। मुझे आपकी आवश्यकता है। मैं आपसे प्यार करता हूँ। मैं आज से आपका अच्छे से ख्याल रखूंगा। अब मुझे पता है कि आपको सबसे ज्यादा क्या नुकसान पहुंचाता है। मुझे स्वस्थ रखने के लिए धन्यवाद।
धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद

<u>उदाहरण: 35 वर्ष की आयु के व्यक्ति का अग्र्याशय</u>

अग्र्याशय, 35 वर्षों के बाद, मुझे पता चला कि आप कहाँ हैं। धन्यवाद।
मेरी जानकारी के बिना कि आप कहाँ हैं, आपने मेरा ध्यान रखा। आपने दिन-रात मेरे लिए बहुत मेहनत की है। मैंने इतने सालों तक आपके द्वारा न पसंद की गई सभी चीजों को खाकर आपको नुकसान पहुंचाया है। मुझे माफ कर दें। मुझे आपकी आवश्यकता है। कृपया मुझे माफ कर दें अगर जाने या अनजाने में मैंने आपको किसी भी तरह से नुकसान पहुंचाया है। अब से मैं आपकी देखभाल करूंगा।
मैं चीनी, मिठाई, किसी तरह का **मीठा, अत्यधिक कार्बोहाइड्रेट** का सेवन नहीं करूंगा। अब मुझे पता है कि वे आपके लिए अच्छे नहीं हैं। कृपया मेरे जीवन के अंत तक मेरे साथ रहें। मुझे आपकी आवश्यकता है। मैं आपसे प्यार करता हूँ। मैं आज से आपका अच्छे से ख्याल रखूंगा। अब मुझे पता है कि आपको सबसे ज्यादा क्या नुकसान पहुंचाता है। मुझे स्वस्थ रखने के लिए धन्यवाद।
धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद।

Copyright @ All rights reserved

आध्यात्मिक अभिकथन

स्वयं की आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाने और स्वयं की उच्चतम आत्मा के साथ संपर्क स्थापित करने की पुष्टि

www.pranavioletheal ing.com

इनमें से किसी भी प्रति की प्रतिलिपि बनाना या मुद्रित करना अवैध है

Copyright @ All rights reserved **Hindi**

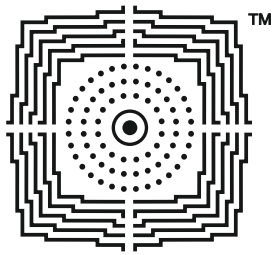

(यह अभिकथन पढ़ते समय दिव्य अग्नि को अपनी ओर आने दें व आपको चारों ओर से घेरने दें।)

मैं दिव्य अग्नि का प्राणी हूँ,
मैं वह पवित्रता हूँ जिसकी ईश्वर अभिलाषा करते हैं
(इसे जरुरत अनुसार चाहें उतना करें)

मेरी आत्मा दिव्य अग्नि की आत्मा है,
मेरी आत्मा वह पवित्रता है जिसकी ईश्वर अभिलाषा करते हैं
(इसे जरुरत अनुसार चाहें उतना करें)

(यह दो लाइनें आप अपने घर, ऑफिस, गांव, शहर, देश, पति, पत्नी, बच्चों व अन्य किसी भी व्यक्ति के लिए भी बोल सकते हैं)

जैसे:
मेरा घर दिव्य अग्नि का स्थान है,
मेरा घर वह पवित्रता है जिसकी ईश्वर अभिलाषा करते हैं

एक समय में ३ बार करें:

धरती, आकाश और समुद्र के प्राकृतिक प्राणी दिव्य अग्नि के प्राणी हैं,
धरती, आकाश और समुद्र के प्राकृतिक प्राणी वह पवित्रता हैं जिसकी ईश्वर अभिलाषा करते हैं

धरती माँ दिव्य अग्नि की ग्रह हैं,
धरती माँ वह पवित्रता हैं जिसकी ईश्वर अभिलाषा करते हैं

हमारा चंद्रमा दिव्य अग्नि का उपग्रह है,
हमारा चंद्रमा वह पवित्रता है जिसकी ईश्वर अभिलाषा करते हैं

हमारा सूर्य दिव्य अग्नि का सितारा है,
हमारा सूर्य वह पवित्रता है जिसकी ईश्वर अभिलाषा करते हैं

Copyright @ All rights reserved

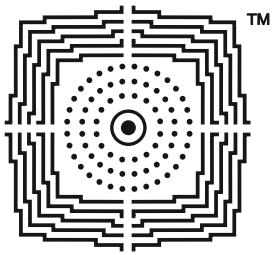

मैं हूँ

मैं यह भौतिक शरीर नहीं हूँ,
मैं वह हूँ जो मैं हूँ

मैं यह गलत भावना नहीं हूँ,
मैं वह हूँ जो मैं हूँ

मैं यह गलत विचार नहीं हूँ,
मैं वह हूँ जो मैं हूँ

मैं यह विचलित मन नहीं हूँ,
मैं वह हूँ जो मैं हूँ

मैं एक आत्मा हूँ
ईश्वर मेरे निर्माता हैं
मेरा यह शरीर मेरी आत्मा का मंदिर है

मैं एक दिव्य चिंगारी हूँ
मैं ईश्वर के साथ जुड़ा हुआ हूँ
मैं सबके के साथ जुड़ा हुआ हूँ

दिन प्रतिदिन मैं अपने कर्मों का संतुलन कर रहा/रही हूँ

मैं इस जीवनकाल में अपनी आत्मा के लिए यह दिव्य योजना और दिव्य दिशा को स्वीकार करता/करती हूँ

मैं ईश्वर की बनाई परिपूर्ण कृति, तन-मन-आत्मा रूप मे व्यक्त हूँ

मैं ईश्वर की पवित्रता हूँ एवं ईश्वर का प्रतिरूप हूँ
मैं वह पवित्रता हूँ जिसकी ईश्वर अभिलाषा करते हैं

मैं वह हूँ जो मैं हूँ
मैं वह हूँ जो मैं हूँ
मैं वह हूँ जो मैं हूँ

मैं इश्वर के साथ जुड़ा हूँ
मैं सभी के साथ जुड़ा हूँ

Copyright @ All rights reserved

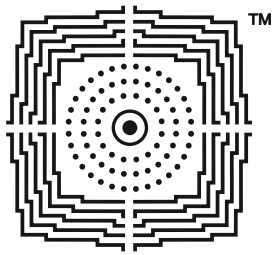

मैं रोशनी हूँ

मैं रोशनी हूँ, उज्जवल रोशनी, प्रचंड रोशनी,
प्रस्फुटित होती हुई रोशनी

ईश्वर मेरे अंदर के अंधकार का क्षय कर,
उसे रोशनी में परिवर्तित कर रहे हैं

आज के दिन मैं सर्वलौकिक सूर्य का केंद्रबिंदु हूँ
मेरे अंदर से होकर एक निर्मल नदी बहती है
मैं रोशनी का ऐसा जीवंत फुव्वारा हूँ जो इंसानी भावनाओं और विचारधारा से परे है

मैं ईश्वर की दूरस्थ सीमाचौकी हूँ
मैं रोशनी की ऐसी शक्तिशाली नदी हूँ जो उस अंधकार को निगल जाएगी जिसने मेरा गलत इस्तेमाल किया

मैं रोशनी, मैं रोशनी, मैं रोशनी हूँ

मैं रोशनी में रहता हूँ, रहता हूँ, रहता हूँ
मेरा पूर्ण आयाम रोशनी है
मेरा पूर्ण अभिप्राय रोशनी है

मैं रोशनी, मैं रोशनी, मैं रोशनी हूँ

मैं दुनिया में जहाँ भी जाता हूँ, वहां रोशनी की बाढ़ ले आता हूँ

ईश्वर का आशीष सब तक पहुंचाता हूँ, ईश्वर के राज्य का उद्देश्य मज़बूत करता हूँ व इस उद्देश्य को सब तक पहुंचाता हूँ

मैं रोशनी, मैं रोशनी, मैं रोशनी हूँ

Copyright @ All rights reserved

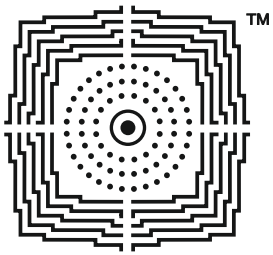

धरती माँ के लिए प्रार्थना

हे परब्रम्ह, दिव्य पिता, दिव्य माता, मेरी उच्चतम आत्मा, मेरे आध्यात्मिक मार्गदर्शकों, सहायकों एवं गुरुजनों, समस्त आध्यात्मिक मार्गदर्शकों, सहायकों एवं गुरुजनों, समस्त उपचारात्मक देवदूतों, धरती माँ के दिव्य रक्षक, धरती माँ के समस्त प्राकृतिक प्राणी, महान कर्म मंडल

मैं विनम्रतापूर्वक दिव्य आशीर्वाद का आह्वान करता हूँ कि मैं धरती माँ पर ईश्वर के आशीर्वाद का साधन बना हूँ
ईश्वर आप मेरा तदानुसार मार्गदर्शन करें व मुझे सुरक्षा प्रदान करें

मैं वह हूँ जो मैं हूँ

धरती माँ पर दिव्य प्रकाश, दिव्य शक्ति व दिव्य विवेक बना रहे। दिव्य प्रकाश उन सभी नकारात्मक ऊर्जाओं को प्रज्जवलित कर डाले जो धरती माँ पर एकता व एकात्मता को रोक रहीं हैं। धरती माँ पर शांति व सदभावना बनी रहे

धरती माँ पर धन, धान्य व जल की प्रचुरता हो
धरती माँ का प्रत्यावर्तन हो व उसको नया जीवन मिले
सभी प्राणियों में प्रेम, दया, करुणा, आनंद व आध्यात्म की प्रचुरता हो

धरती माँ पर ईश्वर के नाम की ज्योति को जलाये रखने वाले सभी लोगों पर दिव्य प्रकाश, दिव्य शक्ति, दिव्य विवेक व दिव्य ज्ञान का आशीर्वाद बना रहे

ईश्वर सभी के अंदर से डर व संशय को दूर करें व
सभी प्राणियों में एकात्मता जागृत करें

हे ईश्वर आपका, धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद

Copyright @ All rights reserved